ज्ञान का दीपक जलाना है

तेजनारायण राय

हे! मेरे पाठशाला के प्रिय बच्चों
तू नूतन युग का नव अवतार
बंधी मुठ्ठी की तलवार फेंक
उठो जागो! बढ़ाओ कलम की रफ्तार|

तलवार से सिर्फ गर्दनें कटती हैं
प्रकोप से सिर्फ हिंसा की ज्वालाएं उठती हैं
हो जाता है, समाज तार-तार
सुकून बहाल न होते जग में
सदैव उदगम,होते क्रांति रग में

शब्द-शब्द जोड़कर वाक्य कोई नया
गढ़ा है
कोई मधुर गाथा मन है, गुनना है
निज जीवन उत्थान के लिए
उत्कृष्ठ मार्ग एक चुनना है

पढ़ाई के संकल्प बिना
यूं ही किसी का लक्ष्य हुआ न पूरा है
शिक्षक पाठशाला से हुए जो दूर
शिक्षा का सपना रहेगा अधूरा है।

चलो उठो जागो बच्चों,
ज्ञान ग्रंथ सज-धज कर तेरा कर रहा
इंतजार है
तुम देश के हो भविष्य
देश को अब तुम पर एतवार है।
देश में फैले अंधेरे को मिलकर मिटाना है ज्ञान का एक दीपक जलाना है।

Scanned with OKEN Scanner

स्कूली समय में बच्चे मवेशी चरा रहे हैं।

स्कूली समय में बच्चे मवेशी चरा रहे हैं।
चरा रहे हैं
नदी के तट पर
इत्मीनान से एक साथ बैठकर
ईधर कुछ बच्चे वट वृक्ष की जटाओं
को
पकड़कर झूला झूल रहें हैं बारी-बारी से
भाई यह दृश्य तो ठीक है
परन्तु बच्चों का भविष्य जा रहा है
अंधेरों में
स्कूली समय में बच्चे मवेशी चरा रहे हैं।
आजकल तो स्कूल है, गांव-गांव में
तो फिर क्यों नहीं भेजा, इनके मां-बाप ने
इन बच्चों को शिक्षा लेने स्कूल
लगता है यह सोचने वाली बात नहीं है
यह तो बिल्कुल समझाने वाली बात है
स्कूली समय में बच्चे मवेशी चरा रहे हैं।
लगता है निरक्षर हैं इनके माता-पिता
इसलिए तो अपने बच्चों को शिक्षा से
दूर रखकर मवेशी चरवा रहे हैं।
स्कूली समय में
लगता है मालूम नहीं है कि
बच्चे देश के भविष्य हैं
यहां तो सारे के सारे बच्चे
शिक्षा से वंचित होकर निरक्षरता का झंडा हवा में लहरा रहे हैं
स्कूली समय में बच्चे मवेशी चरा रहे हैं

Scanned with OKEN Scanner